3. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए।

(क) लोकोक्तियाँ अथवा पहेलियाँ (7)

(ख) रामलीला अथवा माच (6)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Maitreyi College Chanakya Puri, New Delhi-110021 LIBRARY

02.01.2024 (M)

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 5363 **G**

Unique Paper Code : 12057501

Name of the Paper : हिंदी की मौखिक और लोक साहित्य परंपरा

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi**

Semester : V

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(क) लोक साहित्य के विविध रूपों का परिचय दीजिए। (12×4=48)

अथवा

हिंदी प्रदेश की जनपदीय बोलियों का सामान्य परिचय दीजिए।

(ख) श्रम गीतों के सौन्दर्य का विवेचन कीजिए।

अथवा

लोकगीत का स्वरूप स्पष्ट करते हुए विवाह गीतों का सोदाहरण परिचय दीजिये।

(ग) लोकगाथा की विशेषताओं को रेखांकित कीजिए।

अथवा

लोककथा के तत्वों के आधार पर मालवी लोक कथा 'दो मूँड़ों की दोणी' का विवेचन कीजिए।

(घ) रासलीला की विशेषताओं का सोदाहरण उल्लेख कीजिए।

अथवा

लोकनाट्य सांग के संदर्भ में पद्मावत सांग का विवेचन कीजिए।

2. सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (7+7=14)

(क) दूसरा दन उनीज तरे माँ ने खीर ने राबड़ी बणाई। सूरज नारायण थाली देखता रया था। माँ परासी री थी। उनने देख्या के उनकी थाली में खीर ने बऊ की थाली में राबड़ी है। अब तो उनके अचंभो होण लगे। माँ कई जादू टोनो जाने है, या कई बात है ? खूब विचार में पड़ी ग्या वी तो। नी समज में अई तो उनके दोणी मेंज झाँकी के दख्या। "अरे त्हारी या बात है ?"

अथवा

गंगा के आवै ते पापिन का बड़ा फायदा भा। जो कोउ गंगा नहाय ल्यात उइ तरिके बैकुंठे पहुँचि जात रहा। ई तरा ते सरग लोक माँ मनइन के आबादी बाढ़े लागि। तब एक दिन भगवान जमराज का बोलाय कै पूँछेनि कि जमराज जी, का कलजुग खतम होइगा ? जमराज बोले - भगवन ! कलजुग अबै कइसे होइ जाई, अबै तो सुरूआते भय है। तब भगवान कहेनि - जौ कलजुग नाहीं खतम भा आय तौ सरग माँ भीड़ काहे लागि है। का अब सबै धरमात्मा पैदा होय लाग हैं।

(ख) सींका की बीनी डेलरिया हो, सीला बीने जांव,

सासू की बीनी डेलरिया हो।

यहि रे डेलरिया माँ सुरुज किरनिया।

सीला क बीन चुन भरूँ रे बखरिया,

सडयाँ की बनी मैं दुलरिया।।

अथवा

कइसे खेले जाइब सावन में कजरिया

बदरिया घिरि आइल ननदी।

घर से निकसी अकेली, संग में एको ना सहेली

गुण्डा रोकि लेले बिचही डगरिया

बदरिया घिरि आइल ननदी।